Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 18/July/2024 IJRAW: 2024; 3(8):281-283 Accepted: 25/August/2024

रामायण महाकाव्य में त्याग की अवधारणा

[*1]सुरेन्द्र कुमार शुक्ल और [2]डॉ. मंशा राम वर्मा

[*1]शोधार्थी, संस्कृत विभाग, शोध अध्ययन केन्द्र, लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कालेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश, भारत।

[2]शोध निदेशक, शोध केन्द्र श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कालेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

महाकाव्य का ध्येय ही त्याग है, इसका पठन-पाठन, श्रवण करने से ऐसा प्रतीत होता है कि यदि त्याग को अपने जीवन में उतार लिया जाए तो परिवार, समाज, राष्ट्र और देश स्वत: ही उन्नति की तरफ अग्रसर हो जाएगा। इसके साथ-साथ यह महाकाव्य इस बात की भी अभिप्रेरणा देता है कि व्यक्ति में जातिगत हित, कोई औचित्य नहीं रखते है,यह दृष्टांत अनेक स्थान पर दिखाई देता है। अपने व्यक्तिगत हित को छोड़कर, यदि व्यक्ति त्याग की वेदी पर बैठ जाता है तो वह अन्य व्यक्तियों के लिए उदाहरण बन जाता है। यह महाकाव्य हमें इस बात के लिए प्रेरित करता है कि त्यागी मनुष्य के लिए सर्वश्रेष्ठ कर्म है। यह आर्ष ग्रंथ हमें पति-पत्नी के बीच में त्याग की अपेक्षा को बताता है कि यदि पति-पत्नी के बीच में त्याग है तो वह परिवार स्वर्ग के समान दृष्टिगत होगा। यह महाकाव्य जन-जन को यह अभिप्रेरणा देता है कि हमें भी त्याग, परोपकार, स्नेह, बंधुत्व और अपने कर्म से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए।

मुख्य शब्द: रामायण, महाकाव्य, त्याग, व्यक्तिगत हित

प्रस्तावना

रामायण महाकाव्य, महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित है। यह महाकाव्य में 24000 श्लोक से निबद्ध होने के कारण इसे चतुर्विंशतिशाहस्त्री संहिता के नाम से भी जाना जाता है। रामायण महाकाव्य प्रभु श्री रामचंद्र का अयन है।रामायण महाकाव्य रमेति इति राम: अर्थात जो रमण करता है, वही राम है। जिसका जीवन चरित्र वर्णन करने वाले महाकाव्य को रामायण कहा गया है।

रामायण को आदि काव्य और महर्षि वाल्मीकि को आदि कवि के नाम से संबोधित किया जाता है। रामायण संस्कृत साहित्य के काव्य जगत का प्रथम काव्य है, जो अनुष्टुप छंद में लिखा गया है। इस महाकाव्य का श्रवण, पठन, गायन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि पूरा महाकाव्य त्याग से ओत-प्रोत है। त्याग प्रत्येक मनुष्य, जीव और पेड़ पौधों में दिखाई देता है। स्वैच्छिक हो या इच्छिक सभी को त्याग करना ही पड़ता है।

नवाचार और प्रगति के लिए त्याग आवश्यक है। पेड़ों में नए फल फूल की प्राप्ति तभी होती है जब वह अपने पुराने पत्तों का परित्याग कर देता है। मानव शरीर में यदि त्याग को न अपनाया जाए तो यह शरीर बीमारियों का घर बन जाएगा। श्रीमद्भागवत गीता में भी कहा गया है कि नए शरीर की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को पुराने शरीर का त्याग करना ही पड़ता है। मनुष्य को युवावस्था को प्राप्त करने के लिए बचपन का त्याग और बुढ़ापा प्राप्त होने पर युवावस्था का त्याग स्वत: ही हो जाता है।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णानि नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि बिहाय जीर्णान्यानि संयाति नवानि देही।। (1)

रामायण महाकाव्य में सर्वत्र त्याग ही त्याग परिलक्षित हो रहा है। महाकाव्य की शुरुआत में ही त्याग से है। महर्षि वाल्मीकि गंगा स्नान जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक क्रौञ्च पक्षी को ब्याध द्वारा घायल देखा। क्रैञ्ची के करुण क्रंदन से द्रवित होकर के महर्षि ने ब्याध को शाप दे दिया।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम:शाश्वती सदा।
यत क्रौञ्च मिथुनादेकमवधी:काम मोहितम्।।(2)

ध्यातव्य है कि महामुनी जानते थे कि ब्याध का कर्म ही पक्षी मारना है, लेकिन क्रौञ्ची के करुण क्रंदन को सुनकर महर्षि को अपना कर्म त्यागना पड़ा। और महर्षि ने निषाद को शाप दे दिया कि उसे शांति की अनुभूति कभी नहीं होगी। ऋषि मुनियों का स्वभाव ही होता है कि जब जन-कल्याण या किसी निरापराधी पर कोई संकट आ जाता है, तो वह अपने शांत स्वभाव को छोड़ देते हैं।रामायण महाकाव्य में एक दृष्टांत है कि महर्षि विश्वामित्र यज्ञ कार्य संपन्न कर रहे थे। जब उनके यज्ञ कार्य में विघ्न- बाधा पड़ने लगी तो वह महाराज दशरथ के पुत्र राम और लक्ष्मण को मांगने चले आए, प्रारंभ में महाराज ने राम

***Corresponding Author:** सुरेन्द्र कुमार शुक्ल

और लक्ष्मण को देने से मना कर दिया था। पर जन-कल्याण और महर्षि वशिष्ठ के समझाने पर उन्होंने सहर्ष अपने दोनों पुत्रों को महर्षि के साथ भेज दिया।

स पुत्रं मूध्न्युपाघाय राजा दशरथस्तथा:।
ददौ कुशिकपुत्राय सुप्रीतेनात् रात्मना।।(3)

ध्यातव्य है कि जनकल्याणार्थ महर्षि यज्ञ कार्य कर रहे थे, यज्ञ कार्य में विघ्न पड़ने पर दूसरे के पुत्रों को मांगने चले गए। दूसरी तरफ महाराज दशरथ प्रसन्नतापूर्वक अपने पुत्र को उनके साथ भेज दिया। तीसरी तरफ पिता की आज्ञा से दोनों भाई मुनि के साथ चले गए। यहां पर महर्षि विश्वामित्र, महाराज दशरथ,श्री राम और लक्ष्मण सभी त्यागी अपने त्याग को उच्चतम विन्दु पर स्थापित कर रहे हैं।
इस आर्ष काव्य में सर्वत्र त्यागी दिखाई दे रहे है। गङ्गावतरण "में महर्षि भागीरथ के पुरखों का जप तप, सगर के पुत्रों द्वारा पिता के आज्ञानुसार अश्व की खोज करना, अहिल्या-उद्धार, विश्वामित्र का रंभा को क्षमा याचना प्रदान करना, वशिष्ठ और विश्वामित्र के बीच यज्ञ होमधेनु को लेकर युद्ध-कथा, सर्वत्र त्याग ही त्याग है।
महाराज दशरथ को जब श्री राम द्वारा धनुष भंग की जानकारी मिली, तो वह बारात लेकर विवाह के लिए गए। विवाह -संस्कार में वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों ने अपने पूर्वजों की वंशावली बहुत ही सामान्य सहज रूप से वर्णित कर दिया। यह त्याग नहीं तो क्या है कि कोई पक्ष किसी के प्रति मन में संदेह नहीं रखना चाहता है।
विवाहोपरान्त जब सब अयोध्या आ गए तो महाराज दशरथ ने राम का राज्याभिषेक के बारे में सोचा। सर्वत्र प्रसन्नता का विषय था किंतु मंथरा के कहने पर माता का कैकेई ने महाराज से दो वरदान मांग लिया। महाराज दशरथ ने जब उनके दो वरदान सुने तो उन्होंने बार-बार कई से विनय किया की वह इस प्रकार वरदान ना मांगे, महाराज ने कहा कि वह कौशल्या सुमित्रा को भी छोड़ सकते हैं, राज्य लक्ष्मी का त्याग कर सकते हैं, प्राण स्वरूप पितृ भक्त श्रीराम को छोड़ना उनके लिए कठिनता का विषय है।

कौसल्यां च सुमित्रां च त्यजेयमपि वा श्रियम्।
जीवितं चात्मनो रामं न त्वेव पितृवत्सलम्।। (4)

श्री राम को सारी जानकारी हुई तो, उन्होंने अपने माता कैकेयी से कहा कि उन्हें इस राज्य की कोई ही आवश्यकता नहीं है। वह महाराज के वचनों का पालन करने के लिए कोई भी कार्य कर सकते हैं।तीक्ष्ण विष को खा सकते हैं, समुद्र में छलांग लगा सकते हैं, आग में कूद सकते हैं। यही नहीं उन्होंने माता से कहा कि उन्हें पिता से वरदान मांगने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वह सहर्ष अपने भाई भरत को उनके कहने पर ही अयोध्या का राज छोड़ देते। भरत से वह इतना प्रेम करते हैं कि माता से कहते हैं, भरत के लिए राज्य तो क्या वह सीता, प्राण और समस्त वैभव का परित्याग कर सकते हैं।

अहं हि सीतां राज्यं च प्राणानिष्टान् धनानि च।
हृष्टो भ्रमते स्वयं दद्यां भरतायाप्रचोदित:।। (5)

ध्यातव्य है कि त्याग की ऐसी अवधारणा जहां पर एक भाई दूसरे भाई के लिए सर्वस्व अर्पित करने के लिए तत्पर है, ऐसा अन्य महाकाव्य में दुर्लभ है। अपने भाई भरत को राज्य देकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि अपने भाई के लिए कोई भी कार्य और कोई भी वस्तु अर्पित करने से पीछे नहीं हटना चाहिए।
श्री राम के वन -गमन के बाद महाराज दशरथ ने अपने प्राण छोड़ दिया। भरत जब वापस अयोध्या आए और उन्हें पिता की मृत्यु एवं श्री राम के वन-गमन की जानकारी मिली, तो उनका हृदय बहुत ही द्रवित हुआ और अचेत होकर वह पृथ्वी पर गिर पड़े। उन्होंने अपनी माता कैकेयी को फटकारते हुए कहा कि उन्होंने यह क्या कर डाला..? उन्होंने माता से कहा कि राम जैसे धर्मात्मा ने उनका क्या बिगाड़ा था..? कि उन्होंने उन्हें मृत्यु के सदृश कष्ट भोगने पर विवस कर दिया।

किं नु तेऽदूषयद् रामो राजा वा भृशधार्मिक:।
ययोर्मृत्युर्विवासश्च त्वत्कृते तुल्यमागतौ।। (6)

भरत दु:ख से इतने द्रवित हुए कि उनके मन में अपने भाई से राम के प्रति अपार स्नेह जागृत हो गया। एक भाई का दूसरे भाई के प्रति ऐसा त्याग, इस महाकाव्य में ही हो सकता है। उन्होंने सोचा कि सत्य पराक्रमी श्री रामचंद्र जी जब तक अयोध्या नहीं आएंगे, तब तक यह कलंक दूर नहीं होगा।

अहमप्यवनीं प्राप्ते रामे सत्यपराक्रमे।
कृतकृत्यो भविष्यामि विप्रवासितकल्मष:।। (7)

भरत की माता कौशल्या से अनेकानेक शपथ लेते हुए कहते हैं कि उन्हें इस बात की कोई जानकारी नहीं थी। भरत माता के चरणों में गिर पड़े और बारंबार क्षमायाचना मांगने लगे। भरत जी के अनेकानेक शपथ खाने से माता कौशल्या ने भरत को गले से लगा लिया। उन्होंने उसे कहा कि उनका इस प्रकार शपथ खाना उन्हें और कष्ट दे रहा है।

इत्युक्त्वा चाङ्कमानीय भरतं भ्रातृवत्सलम्।
परिष्वज्य महाबाहुं रुरोद भृशदु:खिता।। (8)

ध्यातव्य है कि जिनके पुत्र को उसकी माता ने वन भेज दिया हो, वह पुत्र स्नेही माता भरत से कहती है कि वह बार-बार शपथों को खाकर उसके हृदय को और अधिक दुखित ना करें। वह जाती है कि भरत जैसा धर्मात्मा ऐसा कार्य कभी नहीं कर सकता है।
भरत पिता की अन्तेष्टि क्रिया करने के बाद, गुरु वशिष्ठ और मंत्री सुमंत के साथ राम को वापस लौटाने के लिए वन को चल दिए। वन यात्रा में उन्होंने श्री राम द्वारा सहन किए गए कष्ट को देखकर उन्हें बहुत कष्ट हुआ। जब उन्हें यह पता चला कि यहां से श्री रामचंद्र जी पैदल गए हैं तो वहां से वह भी रथ छोड़कर पैदल हो गए। भाई भाई के प्रति ऐसा त्याग भरत जैसा त्यागी ही कर सकता है।अपने भाई श्री राम से भरत बारंबार आग्रह करते हैं कि वह राज्य भार ग्रहण कर लें। भरत अपने भाई श्री राम से आग्रह करते हुए कहते है कि जेष्ठ पुत्र के रहते हुए छोटा भाई राजा कैसे हो सकता है..?

शाश्वतोऽयं यदा धर्म: एवं स्थितिऽस्मासु नरर्षभ।
ज्येष्ठे पुत्रे स्थिते राजा न कनीयान् भवेन्नृप:।। (9)

भरत श्रीराम से बारंबार निवेदन करते हैं कि वह चलकर राज्य भार ग्रहण करें। रामचंद्र जी राज ग्रहण करने में पिता की आज्ञा से वनवास बताते हैं तो भरत कहते हैं कि वह उन पर दया करें। और यदि उनकी बात नहीं मानते हैं तो वे भी उनके साथ रहेंगे।

यदि त्ववश्यं वस्तव्यं कर्तव्यं च पितुर्वच:।
अहमेव निवत्स्यामि चतुर्दश वने समा:।। (10)

ध्यातव्य है एक भाई का दूसरे भाई के प्रति इतना बड़ा त्याग रामायण महाकाव्य में सर्वत्र परिलक्षित हो रहा है। एक भाई पिता की आज्ञा से वन में निवास करने आया है, तो दूसरा भाई वन से उसे मनाने आया है। दोनों भाई अपने-अपने कर्तव्य पर अडिग है। कोई भी राज्य भार ग्रहण नहीं करना चाहता है।धन्य है श्री राम और धन्य है भरत जैसा भाई।

रामायण महाकाव्य में सर्वत्र त्याग ही त्याग दिखाई दे रहा है। सीता का हरण करने रावण आया और उनको आकाश मार्ग से ले जाने लगा। उस समय गिद्ध राज ने उनका सामना किया। उसने रावण को पहले बहुत समझाया कि एक राजा के लिए यह कर्म उचित नहीं है। वह पुलकस्त जैसे महात्मा का पौत्र है, और राजा है, उसके लिए स्त्री हरण एक निंदनीय अपराध है। जब वह नहीं माना तो गिद्धराज उनसे भीड़ गया और ललकारते हुए कहने लगा कि वह वृद्ध है और रावण युवा है और शास्त्र से सुसज्जित है। फिर भी उसके रहते हुए वह जानकी का हरण नहीं कर सकता है।

वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथ:कवची शरी।
न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे गमिष्यसि।। (11)

ध्यातव्य है जहां नारी के प्रति इतना त्याग की गिद्धराज अकेले होते हुए भी रावण से युद्ध करने लगा। त्याग का इतना बड़ा उदाहरण कि अपने जान की परवाह किए बिना वह नारी रक्षा में लग गया। ऐसे उदाहरण इस आर्ष काव्य में ही है।

निष्कर्ष

रामायण महाकाव्य के पठन-पाठन, श्रवण और देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह महाकाव्य त्याग से पूर्ण ओत-प्रोत है। इसके महात्म्य को शब्दों व्यक्त कर पाना किसी भी कवि के लिए संभव नहीं है। इस महाकाव्य में राम के पावन चरित्र को इतने मन मोहक ढ़ग से वर्णन किया गया है कि उनमें एक आदर्श भाई, आदर्श पुत्र, आदर्श पिता और आदर्श राजा के समस्त गुण परिलक्षित होते हैं। उनमें त्याग, परोपकार, उदारता, दया, लोक-कल्याण की भावना पूर्ण रूप से भरी हुई थी। राम के त्यागमय चरित्र के साथ, इस महाकाव्य के समस्त पात्र उन्हें के तरह त्याग से ओत-प्रोत दिखाई दे रहे हैं। महाकाव्य का प्रारंभ महर्षि के त्याग से शुरू होता है जिन्होंने क्रैञ्च के करुण दशा को देखकर निषाद को श्राप दे दिया। इस महाकाव्य में प्रत्येक घटना त्याग से युक्त है।

इस महाकाव्य का भाव ही इतना सरस और अपने में अद्वितीय है, जो अनेक भाव से युक्त होकर त्याग की तरफ ही उन्मुख दिखाई देता है। इस महाकाव्य में प्रत्येक त्यागी अपने त्याग को त्याग के उच्चतम बिंदु पर प्रतिस्थापित करने के लिए तत्पर दिखाई देता है। वास्तव में त्याग, किसी वस्तु की अभावावस्था को नहीं कहा जाता, त्याग तो उस भावावस्था का नाम है कि किसी व्यक्ति के पास संसाधन हो और वह उसका उपयोग न करे, तो उसे हम त्यागी के नाम से संबोधित कर सकते हैं।

इस महाकाव्य में प्रभु श्रीराम ने राज सिंहासन इस कारण से छोड़ दिया कि उनके पिता के द्वारा, माता को दिया गया वचन पूरा हो सके। दूसरा भाई भरत जो त्याग की प्रतिमूर्ति ही है, वह राजगद्दी इसलिए नहीं लेना चाहते हैं क्योकि वह जानता है कि राज्य तो बड़े भाई का है, अतः उस पर अधिकार करना, अनाधिकार व पाप होगा। लक्ष्मण भाई के साथ एक त्यागी जीवन व्यतीत करने के लिए उनके साथ वन में चले गए। सीता ने राजमहलों के सुख को त्याग दिया और पति के साथ अनुगमन कर वन को चली गयी। माता कौशल्या, माता सुमित्रा ने भी अपने सुखों का परित्याग कर दिया, वह चाहती तो अपने पुत्रों को वन जाने से रोक सकती थी, लेकिन उन्होंने अपने व्यक्तिगत हित के लिए ऐसा नहीं किया। लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला का त्याग भी बड़ा सराहनीय है। उर्मिला चाहती तो अपने पिता के घर जाकर जीवन सुख पूर्वक बिता सकती थी,परन्तु ऐसा नहीं किया। 14 वर्ष तक अपने पति की राह, दीपक जलाकर प्रतीक्षा में लगी रही। भरत को जब पिता की मृत्यु और भाई के वन-गमन की जानकारी मिली तो वह उन्हें मनाने के लिए वन को चले गए। स्वयं श्रीराम ने कहा है कि भरत के समान त्यागी विश्व में कोई दूसरा नहीं है। भाई के वन से न लौटने पर शत्रुघ्न को राज्य सौंप कर नंदीग्राम में एक तपस्वी का जीवन व्यतीत करने लगे। मांडवी, सूर्यकीर्ति सभी त्यागी और परोपकारी है। गीधराज जटायु जिसने जीवन भर मांस खाया, वह भी एक स्त्री के रक्षार्थ अपने प्राण का परित्याग कर दिया। शबरी, हनुमान, विभीषण, कुंभकरण, मेघनाथ और अनेक ऋषि मुनियों के चरित्र का आस्वादन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि मानो सभी त्याग की प्रतिपूर्ति है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद् भागवत गीता द्वितीयोध्याय श्लोक 22 गीता प्रेस गोरखपुर
2. श्रीमद्वाल्मीकियरामायण बालकाण्ड द्वितीय: सर्ग: श्लोक 15 गीता प्रेस गोरखपुर
3. श्रीमद्वाल्मीकियरामायण बालकांडे द्वाविंश सर्ग श्लोक नंबर 3 गीता प्रेस गोरखपुर
4. श्रीमद्वाल्मीकियरामायणअयोध्या काण्ड द्वादश: सर्ग: श्लोक 11/12 गीता प्रेस गोरखपुर
5. श्रीमद्वाल्मीकियरामायणअयोध्या काण्ड एकोनविंश: सर्ग: श्लोक 7 गीता प्रेस गोरखपुर
6. श्रीमद्वाल्मीकियरामायणअयोध्या काण्ड चतु:सप्ततितम् सर्ग श्लोक 3 गीताप्रेस गोरखपुर
7. श्रीमद्वाल्मीकियरामायण अयोध्या काण्ड चतु: सप्ततितम्: सर्ग श्लोक 34 गीताप्रेस गोरखपुर
8. श्रीमद्वाल्मीकियरामायणअयोध्या कांड दषट्सप्ततितम्:सर्ग: सप्तम श्लोक 63 गीता प्रेस गोरखपुर
9. श्रीमद्वाल्मीकियरामायण अयोध्या काण्ड द्वयधिशततम्: सर्ग श्लोक 2 गीताप्रेस गोरखपुर
10. श्रीमद्वाल्मीकियरामायण अयोध्या काण्ड एकादशधिकशततम् सर्ग श्लोक26 गीताप्रेस गोरखपुर
11. श्रीमद्वाल्मीकियरामायण अरण्यकाण्ड पञ्चाश:सर्ग:श्लोक 21 गीताप्रेस गोरखपुर